Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-I JANUARY 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

'जमीन पक रही है' काव्य–संग्रह में अभिव्यक्त समाज,व्यवस्था एवं आम आदमी का यथार्थ

प्रा.डॉ.प्रवीणकुमार न.चौगुले
श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद महाविद्यालय,
सांगली

साहित्य में मानवी मनोभावों को अभिव्यक्त करने वाला सशक्त माध्यम काव्य है। मानव समाज को अभिव्यक्त करने में काव्य जमाने से अधिक प्रभावी रहा है। कवि अपने द्वारा समष्टिगत भाव–भावनाओं को अपनी कविताओं में प्रस्तुत करता है। कवि समाज का हिस्सा है, अत: समाज उसकी कविताओं में प्रतिबिंबित होता है। केदारनाथ जी की कविता भी समाज की गतिविधि के प्रति पूरी तरह से सचेष्ट है। केदारनाथ सिंह जी समकालीन हिंदी कविता के सशक्त एवं श्रेष्ठतम हस्ताक्षर हैं। उन्होंने अपनी रचना यात्रा का आरंभ 'तीसरा सप्तक' से किया था, जिसमें पहली बार उनकी २३ कविताएँ एक सुदीर्घ गंभीर वक्तव्य के साथ प्रकाशित हुई। हिंदी कविता के क्षेत्र में वे एक भावुक गीतकार के रूप में सामने आए। लोकगीतों जैसी सहज भावाभिव्यक्ति, ताजगी और मिठास के कारण इनके तरल रोमानी गीतों ने सहृदयजनों को आकर्षित किया था। 'तीसरा सप्तक' में उनके इसी परंपरा के गीत संकलित हैं। इसके बाद उनका प्रथम काव्य–संग्रह 'अभी बिल्कुल अभी' सन १९६० में प्रकाशित हुआ। केदारनाथ सिंह जी में गहरी युगीनता परिलक्षित होती है। वे सदैव अपने समय को लेकर चले हैं। उनकी चिंताएँ सिर्फ भावुक चिंताएँ नहीं थीं, बल्कि उस समय के राजनीतिक, सामाजिक सरोकारों की चिंताएँ थीं। उन्होंने हिंदी कविता में अपना अलग ढ़ंग विकसित किया। कविता और नई कविता के दौर में भी वे प्रगतिशील समय को बनाए हुए थे, या एकदम चुप थे। 'अभी बिल्कुल अभी' के प्रकाशन के बीस साल बाद उनके 'जमीन पक रही है' काव्य–संग्रह का प्रकाशन हुआ। बाद में 'यहाँ से देखो' और 'अकाल में सारस' ये दो काव्य–संग्रह प्रकाशित हो गए। सन १९८० में उन्हें केरल के 'कुमारन आशान' कविता–पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही 'अकाल में सारस' के लिए १९९० के साहित्य अकादमी पुरस्कार से वे सम्मानित हुए। विभिन्न सामाजिक मूल्यों, तत्वों एवं पहलुओं का चित्रण उनकी कविताओं में हुआ है। उनकी कविता में समाज के प्रति की प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है। अत: प्रस्तुत शोधालेख के लिए मैंने उनके 'जमीन पक रही है' कविता–संग्रह की कुछ कविताओं का चयन किया है।

१९८० में 'जमीन पक रही है' के प्रकाशन के पश्चात केदारनाथ सिंह जी चर्चा में आए और उनकी चर्चा नागार्जुन, केदार, त्रिलोचन और शमशेर के बाद के कवियों में प्रमुख रूप से की जाती रही है। 'जमीन पक रही है' काव्य–संग्रह में कवि यथार्थ के ठोस धरातल पर काव्य–सृजन करता है। अस्पष्टता और अकविता के बोझिल मुहावरों की जगह सहज और पास–पड़ोस की कविता ने ले ली है। इस दौर में उन्होंने अपनी कविता को एक बृहत्तर आयाम दिया है। और कविता को कठोर यथार्थ बरक्स खड़ा किया है, उनकी कविताओं में सामाजिक सवालों से जूझने की ताकत आई है। 'रोटी', 'सूर्य', 'जमीन', 'आवाज' इन कविताओं में इस तथ्य की पुष्टि होती है। कवि ने अपनी कविता को प्रासंगिकता से जोड़ कर उसे अनिवार्य बनाने की कोशिश की है और अपनी राजनैतिक चेतना का भी परिचय दिया है।[१] 'अभी बिल्कुल अभी' और 'जमीन पक रही है' में केदारनाथ जी की रचना यात्रा का स्पष्ट विभाजन देखा जा सकता है। 'जमीन पक रही है' से एक नए केदारनाथ सिंह जी का उदय हुआ। यहाँ वे निजता से ऊपर उठकर एक सामाजिक यथार्थ से जुड़ गए। डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के शब्दों में, ''केदार की कविता आज की वास्तविकता, व्यवस्था की क्रूरता, समाझौता, चुप्पी, मामूली आदमी की पीड़ा और उसके संघर्ष का चित्रण बहुत सांकेतिक ढ़ंग से करती है।''[२]

प्रकृति एवं समाज के विभिन्न प्रतिकों, बिम्बों, वस्तुओं को इंसान से जोड़ते हुए विविध चिरपरिचित, आत्मीय एवं आश्चर्यजनित छटाओं को वे अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। कवि 'जमीन' कविता में जमीन का इंसानों से रिश्ता जोड़ते हैं। जमीन की गंध, जमीन का पकना, जमीन की हरकत, जमीन को चीरना, जमीन को सीना आदि

गतिविधियों में मानव उपस्थित होता दिखाई देता है। दर्जी, घोडा और औरत आदि सामाजिक हिस्सों से संवेदनात्मक स्तर पर गहरा संबंध जोड़ते हैं। विविध स्थितियों में जीवन के पकने के अर्थ में भी इसे देखा जा सकता है। एक सामाजिक अवस्था के पकने के आधार पर नई अवस्था की उम्मीद की ओर भी कविता संकेत करती है –

उसने तय किया वह एक दिन
एक चाकू लाएगा और जमीन को बीचोबीच
आलू की तरह चीर देगा
वह जमीन की महक दर्जी तक ले जाएगा
और कहेगा – 'सीलो'
वह उस औरत के पास जाएगा
और कहेगा – सब्जी अगर नहीं पकती
तो कोई बात नहीं
जमीन पक रही है[३]

रोटी के लिए होते ऐतिहासिक संघर्ष का ब्यौरा उनकी 'रोटी' कविता के माध्यम से प्रस्तुत होता है। रोटी इंसान के जीवन के लिए मूलभूत आवश्यकता है और फिर उसे पाने के लिए सुध–बुध खोए इंसान उसका शिकार करने चलता है

मैंने उसका शिकार किया है
मुझे हर बार ऐसा ही लगता है
जब मैं उसे आग से निकलते हुए देखता हूँ
मेरे हाथ खोजने लगते हैं
अपने तीर और धनुष
मेरे हाथ मुझी को खोजने लगते हैं
जब मैं उसे खाना शुरू करता हूँ[४]

अंत तक आते–आते कविता 'भूख' के बारे में 'आग का बयान' बन जाती है जो 'दीवारों पर लिखा जा रहा है' और दीवारें धीरे–धीरे 'स्वाद' में बदलने लगती हैं। कवि कविता में आग की ओर इशारा करते हैं। यह कविता रोटी को लेकर महत् अर्थवत्ता को प्रस्तुत करती है। 'बैल' कविता में सामान्य इंसान की मजबूरी की कडुवी सच्चाई को अभिव्यक्त किया गया है। इस कविता का 'बैल' मजबूर आदमी का प्रतीक है, जो दूसरों की इच्छा से संचालित होता है।

आम आदमी के जीवन की असलियत, उतार–चढ़ाव, पीड़ा, संघर्ष, चक्करों को महसूस करते हुए टमाटर बेचने वाली बुढ़िया के माध्यम से, जिसमें माँ का चेहरा छिपा हुआ है, केदारनाथ जी कहते हैं –

टमाटरों के अंदर बहुत–सी नदियाँ हैं
और अनेक शहर जिन्हें बुढ़िया के अलावा
कोई नहीं जानता[५]

'बढ़ई और चिड़िया' में लकड़ी व्यवस्था का प्रतीक हो जाती है, जिसमें चिड़िया का दाना गायब हो गया है। अंत तक आते चिड़िया खुद ही लकड़ी के अंदर फँसी है और चीख रही है। यहाँ क्रूर यातनापूर्ण स्थिति के साथ ही व्यवस्था में कैद मनुष्य की पीड़ा के संकेत मिलते हैं। इसी प्रकार 'आवाज', 'बिना नाम की नदी', 'बीमारी के बाद', 'दुश्मन' आदि कविताओं में कवि ने व्यवस्था की सच्चाई को बयान किया है और वे व्यवस्था में परिवर्तन चाहते हैं। व्यवस्था के यथार्थ की नंगी तस्वीर को केदारनाथ जी ने 'दुश्मन' कविता के माध्यम से बखूबी उतारा है।

'जाड़ों के शुरू में आलू' में मध्यवर्गीय समाज के उत्पादन, उत्पादक और उपभोक्ता समाज के रिश्तों को छुआ गया है। आलू के माध्यम से जमीन, बाजार और घर के संबंध को जोड़ा गया है, जो मध्यवर्गीय समाज के अभिन्न अंग हैं। 'आलू' यहाँ इंसान के प्रतिकस्वरूप भी दिखाई देता है, जिससे स्पष्ट है बाजार में आलू नहीं इंसान बिक रहा है। साथ

ही रोजमर्रा के टूटते और जुड़ते सामान्य इंसान के जीवन को आलू की प्रतिकात्मकता के माध्यम से बयान करते हुए केदारनाथ जी कहते हैं–

वह बाजार में ले आता है आग
और बाजार जब सुलगने लगता है
वह बोरों के अंदर उछलना शुरू करता है
हर चाकू पर गिरने के लिए तत्पर
हर नमक में घुलने के लिए तैयार
जहाँ बहुत–सी चीजें लगातार टूट रही हैं
वह हर बार आता है
और पिछले मौसम के स्वाद से जुड़ जाता है।[९]

केदारनाथ जी की कविताएँ सामाजिक यथार्थ की विभिन्न भंगिमाओं, उनमें व्याप्त विसंगतियों का चित्रण करती हैं। उनकी कविताएँ मानव नियति का सीधा साक्षात्कार करती हैं तथा अमानवीय दबाव का विरोध करती हैं। 'दीवार' कविता में 'दीवार' को मानव विरोधी व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत कर एक सच्चाई को बयान करते हुए वे कहते हैं –

एक फावड़े की तरह उससे पीठ टिकाकर
एक समूची उम्र काट देने के बाद
मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ
कि लोहा नहीं
सिर्फ आदमी का सिर उसे तोड़ सकता है।[१०]

'फर्क नहीं पड़ता' इस प्रसिद्ध कविता के माध्यम से इंसान के इस मुहावरे के माध्यम से युग की खोती हुए संवेदना पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। 'प्यार' जैसी गहरी मानवीय संवेदना और 'सड़क' के बीच जब कोई अंतर ही नहीं रहता हो, तब निश्चित तौर से कहा जा सकता है कि युग संवेदनशून्यता की गहरी खाई में खोता जा रहा है। 'वस्तुएँ' इस कविता में कवि एक नए सामाजिक, आर्थिक पक्ष की ओर संकेत करते हैं। बढ़ते भौतिक चकाचौंध में संवेदनाओं का स्तर कम होने पर भी वस्तुओं की बढ़ोतरी की समस्या की ओर कवि इशारा करते हैं। इंसान से भी बढ़ती हुई वस्तुओं की अहमियत पर सवाल खड़ा करते हुए वे कहते हैं –

मेरी आत्मा से बह रहा है खून
और वस्तुएँ
मेरे खून से फिर पैदा हो रही हैं[११]

'माँझी का पुल' में पुल बनने के सवाल पर सभी गाँव वाले परेशान हैं। इस पुल और गाँव वालों के गहरे आत्मीय संबंध को कविता बयान करती है। यहाँ कवि अपने कस्बे से अपनेपन के साथ गहराईतक जुड़ गए हैं। भय, कुतूहल, शंका, विस्मय ऐसी कितनी–ही तरह की प्रतिक्रियाएँ माँझी के पुल के प्रति गाँव वालों के मन में उभरती हैं। दादी, बूढ़ा चौकीदार, बंसी मल्लाह, लालमोहर, झपसी के भेड़ें, जगदीश, सनझू हज्जाम, मछलियाँ, सँस, घड़ियाल, कछुएँ सब जैसे उस पुल के अविभाज्य हिस्से हैं, सब जैसे माँझी के पुल में ही समाए हुए हैं या फिर माँझी का पुल ही इन सब में समाया हुआ है –

मगर पुल क्या होता है?
आदमी को अपनी तरफ क्यों खींचता है पुल?
ऐसा क्यों होता है कि रात की आखिरी गाड़ी
जब माँझी के पुल की पटरियों पर चढ़ती है
तो अपनी गहरी नींद में भी
मेरी बस्ती का हर आदमी हिलने लगता है?[१५]

साथ ही बस्ती के हर घटक के मन में पुल के प्रति आत्मीयतापूर्ण लगाव है, इसलिए कवि कहते हैं–

मैं खुद से पूछता हूँ
कौन बड़ा है
वह जो नदी पर खड़ा है माँझी का पुल
या वह जो टँगा है लोगों के अंदर?[१६]

'मुक्ति' में आदमी के हित हेतु कवि के लिखने की झटपटाहट उजागर होती है। मुक्ति की अन्य राह न मिलनेपर कवि मानव हित हेतु लिखना चाहता है। कवि लिखना चाहता है – पेड़, पानी, आदमी, एक बच्चे का हाथ, एक स्त्री का चेहरा। कवि यह जानता है, इस बात पर असमर्थता भी व्यक्त करता है कि लिखने से कुछ होने वाला नहीं है, आदमी में कुछ फर्क आने वाला नहीं है, फिर भी वह अपनी पूरी ताकत के साथ आदमी की ओर अपने शब्दों को फेंक धमाका सुनना चाहता है।

केदारनाथ सिंह जी की कविताएँ आज की वास्तविक स्थिति के कठोर साक्षात् की कविताएँ हैं – इसी दिशा में वे काव्य प्रक्रिया की जटिलता को और उसके पीछे कार्यरत रचनात्मक संघर्ष को प्रमाणित करती हैं।[१७] कवि ने भूख, रोटी, नमक, कुल्हाड़ी, पतीली, चूल्हा, दाना, तवा, आटा, चक्की, पेन्सिल, भूसा, जूता, रस्सी, कपड़ा, आलू, टमाटर ऐसे कई आम सामाजिक वस्तुओं को लेकर मूर्त–अमूर्त अनुभव–बिम्बों को कविता में गढ़कर अभिव्यक्ति को बुना है। इन सभी वस्तुओं के बीच मानवीय उपस्थिति को दर्शाते हुए उन्हें संवेदनात्मक स्तर पर नए अर्थ देकर सामने रखा है। साथ ही चिखती चिड़िया, दाने के लिए भूखी चिड़िया, गठ्ठर लादे चलता बैल, भूखा आदमी, लकड़ी चीरता आदमी, टमाटर बेचने वाली बुढ़िया आदि आम जीवन से संबंधित चित्र कविताओं में उपस्थित होते हैं, जो विभिन्न सामाजिक घटकों की अवस्थाओं पर प्रकाश ड़ालते हैं।

निष्कर्षत: केदारनाथ जी ने अपने समय के समाज, व्यवस्था एवं आम आदमी का यथार्थ चित्रण अपनी कविताओं में किया है। अपनी कविताओं के माध्यम से सामाजिक विसंगतियाँ, विभिन्न सामाजिक घटकों की संवेदनाएँ, भाव–भंगिमाएँ, रोटी के लिए इंसान का संघर्ष, मजबूरी, आम आदमी की पीड़ा, उसका संघर्ष, व्यवस्था की बरबसता, इंसान की संवेदनशून्यता, स्त्री की विडम्बना, मध्यवर्गीय रोजमर्रा जीवन, अमानवीय दबाव का विरोध, इंसान के प्रति की आत्मीयता, वस्तुओं की बढ़ती अहमियत की समस्या, सामाजिक स्तर पर प्रेम से आदर्श की प्रतिष्ठापणा, गाँव वालों की आत्मीयता आदि का चित्रण सांकेतिकता से किया है। बिम्बों एवं प्रतीकों के माध्यम से अत्यंत संवेदनशीलता एवं आत्मीयता के साथ सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को उन्होंने उजागर किया है।

संदर्भ सूची –

१. सं. यायावर भारत, खुशगाल राजा. *कवि केदारनाथ सिंह (कवि–कर्म का विवेचन और मूल्यांकन)*, विपक्ष द्वारा प्रकाशित वितरक वाणी प्रकाशन, दिल्ली पृ. ५३–५४
२. चन्द्र, कल्याण. प्र. सं. १९९६. *समकालीन कवि और काव्य*, चिन्तन प्रकाशन, नौबस्ता, कानपुर–२०८०२१, पृ. ४३
३. सिंह, केदारनाथ. च. सं. २०००. *जमीन पक रही है*, प्रकाशन संस्थान, ४७१५/२१, दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२, पृ. ११
४. वही, पृ. २५
५. वही, पृ. ३३
६. वही, पृ. ६०
७. वही, पृ. ६८
८. वही, पृ. ७१
९. वही, पृ. ९६
१०. वही, पृ. ९८
११. श्रीवास्तव, परमानन्द. प्र. सं. २०१४. *समकालीन कविता : नए प्रस्थान*, वाणी प्रकाशन, ४६९५, २१–ए, दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२, पृ. ७७